वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एमआरजे 06

एम.ए. उत्तरार्द्ध परीक्षा

प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य

अवधि 3 **घंटे** **अधिकतमअंक** 80

निर्देश: **औ पेपर खंड अ, ब अर स में बट्यौडौ है। खंड 'अ' में साव छोटा सवाल, खंड 'ब' में छोटा सवाल अर खंड 'स' में निबंधात्मक सवाल दियौडा हैं।**

खंड- स

नोट: **नीचै लिख्या प्रश्नां मांय सूं कोई दो प्रश्न करणा है। सबद सीमा** 400 **सूं** 500 **सबद है। हरैक प्रश्न** 16 **अंक रौ है।** **16 × 2 = 32**

1. **'ख्यात' रौ अरथ समझावतां थकां राजस्थानी ख्यात साहित्य री विसेसतावा री विवेचना करौ।**

अथवा

''राजान राउत री बातवणाव-'' रचना री भासा सैली माथै विस्तार सूं विवेचना करौ।

3. **''कुंवरसी सांखलों में निरूपित समाज अर संस्कृति री विवेचना करौ।**

अथवा

''अचलदास खींची री वचनिका'' रा लेखक बाबत जाणकारी मांडता हुआ इ रचना री समीक्ष करो।

3. **'नैणसीरी ख्यात' री उदाहरणां साथै समीक्षा करौ।**

अथवा

''पृथ्वीचन्द्र चरित्र ग्रंथ री विवेचना करौ।

4. **बही साहित्य रौ वरगीकरण करतां थकां उणरी विस्तार सूं विवेचना करौ।**

अथवा

मध्यकालीन गद्य री विविध विधावां री जाणकारी विस्तार सूं मांडो।

5. **'वात साहित्य' राजस्थानी लोक साहित्य री घणमोली धरोहर है।'' इण कथन रै आधार माथै वात साहित्य री समीक्षा करौ।**

अथवा

'ख्यात सूं आप कांई समझौ राजस्थानी ख्यात साहित्य री विस्तार सूं विवेचना करौ।

6. राजस्थानी भासा री वात बणाव परम्परा रौ परिचै देंवता थकां-'राजान राउत रौ बात-बणाव' री विवेचना करौ।

अथवा

'कुंवरसी सांखलो' रचना रै आधार माथै इणरा खास पात्र कुंवरसी री चारित्रिक विसेसतावां उजागर करौ।

7. 'अचलदास खींची री वचनिका' रौ काव्यगत फुटरापौ उजागर करौ।

अथवा

पृथ्वीराज चरित्र ग्रंथ री विवेचना करौ।

8. बही साहित्य रौ वरगीकरण करतां थकां उणरी विस्तार सूं विवेचना करौ।

अथवा

'अचलदास खींची री वचनिका' रा लेखक बाबत जाणकारी मांडौ।

9. राजस्थानी ख्यात साहित्य री उल्लेखजोग ख्यातां माथै विस्तार सूं विवेचना करौ।

अथवा

राजस्थानी वात साहित्य रौ वरगीकरण करौ।

10. 'वचनिका' रौ अरथ स्पष्ट करतां थकां 'अचलदास खींची री वचनिका' रै कथानक नौ उजागर करौ।

अथवा

'नैणसी री ख्यात'री वरणन विसय वस्तु उजागर करौ।

11. 'राजान राउत रौ बात वणाव' माथै विवेचना प्रस्तुत करौ।

अथवा

'पृथ्वीचन्द्र चरित्र माथै उदाहरणां साथै विस्तार सूं टीप करौ।

12. 'बही साहित्य' रौ वरणीकरण करतां थकां इणरै प्रकारां माथै विस्तार सूं टीप करौ।

अथवा

कुंवरसी सांखलो रचना रे आधार सूं कुंवर जी री चारित्रिक विसेसतावां रो बखान करौ।